

डैनियल की पुस्तक - संख्या तैंतालीस

बाइबिलीय भविष्यवाणी में उजाड़ करने वाली घृणित वस्तु के प्रतीकवाद का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-01-07

पौलुस द्वारा मूर्तिपूजक रोम को उस शक्ति के रूप में पहचानना, जिसने पापाई सत्ता के उदय को सन् 538 तक रोके रखा, वही वह साक्ष्य बना जिसे विलियम मिलर ने पहचाना; इसी के आधार पर उसने दानियेल की पुस्तक में 'the daily' को मूर्तिपूजा का प्रतिनिधि ठहराया। विलियम मिलर का ढाँचा दो उजाड़ने वाली शक्तियों पर आधारित था—पहले मूर्तिपूजा, उसके बाद पापाई धर्मसत्ता। उस ढाँचे के समर्थन में मिलर की सबसे महत्वपूर्ण खोज 2 थिस्सलुनीकियों अध्याय दो में पौलुस की गवाही थी, जहाँ पौलुस बताता है कि पापाई सत्ता पर मूर्तिपूजक रोम द्वारा लगाई गई रोक हटा ली जाएगी, ताकि 'पाप का मनुष्य' परमेश्वर के मंदिर में बैठाया जाए और अपने आप को परमेश्वर ठहराए।

दानियेल की पुस्तक में, पैगनवाद का प्रतिनिधित्व करने वाले "दैनिक" के प्रतीक के बाद हमेशा पापाई सत्ता का कोई प्रतीक आता है, चाहे उसे "उजाड़ की अधर्मता" के रूप में प्रस्तुत किया गया हो या "उजाड़ की घृणित वस्तु" के रूप में। फिर भी, 66 से 70 ईस्वी तक के साढ़े तीन वर्षों के दौरान हुई यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश के संबंध में मसीह द्वारा मसीहियों को दी गई चेतावनी में, मसीह ने "भविष्यद्वक्ता दानियेल द्वारा कही गई उजाड़ की घृणित वस्तु" का उल्लेख यरूशलेम में मौजूद मसीहियों के लिए तत्काल भाग निकलने के चिन्ह के रूप में किया। इतिहास बताता है कि वह चिन्ह पापाई रोम का नहीं, बल्कि पैगन रोम का प्रतीक था। यदि उन्हें घेराबंदी और विनाश से बचना था, तो विश्वासयोग्यों को उस चिन्ह को पहचानना था। तो क्या "भविष्यद्वक्ता दानियेल द्वारा कही गई उजाड़ की घृणित वस्तु" पैगन रोम का प्रतीक है या पापाई रोम का?

इसलिए जब तुम उस 'उजाड़नेवाली घृणित वस्तु' को, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता दानियेल ने कहा है, पवित्र स्थान में खड़ा हुआ देखो (जो पढ़ता है, वह समझे), तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों की ओर भाग जाएँ। जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने के लिए नीचे न उतरे; और जो खेत में हो, वह अपने कपड़े लेने के लिए पीछे न लौटे। और उन दिनों गर्भवती स्त्रियों और जो दूध पिलाती हैं, उनके लिए हाय! पर प्रार्थना करो कि तुम्हारा पलायन न तो शीतकाल में हो और न विश्रामदिन में; क्योंकि तब ऐसा बड़ा क्लेश होगा, जैसा न तो जगत के आरंभ से लेकर अब तक हुआ है और न कभी होगा। और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुएों के कारण वे दिन घटाए जाएँगे। मत्ती 24:15-22.

बहन वाइट इस पर टिप्पणी करती हैं कि 66 से 70 ईस्वी तक यरूशलेम के विनाश के इतिहास में यह चेतावनी कैसे पूरी हुई, और वह बताती हैं कि रोमी सेना का ध्वज-चिह्न यरूशलेम में अब भी मौजूद मसीहियों के लिए भाग जाने का संकेत था। तो क्या "वह उजाड़नेवाली घृणित वस्तु, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता दानियेल ने कहा था," मूर्तिपूजक रोम था, या फिर वह पापसी रोम था, जैसा कि मिलर ने अपनी रूपरेखा उसी पर आधारित की थी?

विलियम मिलर को रोम के दोनों रूप (पहले मूर्तिपूजक, फिर पापल) की समझ दी गई थी, लेकिन जिस ऐतिहासिक संदर्भ में वे जीते थे, उसने उन्हें दोनों राज्यों को एक ही राज्य के रूप में मानने के लिए बाध्य किया। और निस्संदेह, वे एक ही राज्य हैं, लेकिन वे दो क्रमिक राज्यों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। 1798 के भविष्यसूचक इतिहास से विवश होकर, मिलर को रोम को मुख्यतः एक ही राज्य के रूप में लेना पड़ा। 1798 में, मिलर का विश्वास था कि मसीह का दूसरा आगमन लगभग पच्चीस वर्षों बाद होगा। उन्हें भली-भांति पता था कि 1798 में पापल रोम को एक घातक घाव लगा था। मिलर के लिए, पापल रोम के बाद आने के लिए कोई अन्य सांसारिक राज्य नहीं था, क्योंकि मसीह शीघ्र लौटने वाले थे।

जिस ऐतिहासिक काल में मिलर थे, उसमें उन्होंने यह समझा कि दानिय्येल की पुस्तक के दूसरे अध्याय की प्रतिमा चार पार्थिव राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि दानिय्येल ने इसी की गवाही दी थी।

और चौथा राज्य लोहे के समान बलवान होगा, क्योंकि जैसे लोहा सब वस्तुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देता है और सबको वश में कर लेता है, वैसे ही वह, जैसा लोहा इन सबको तोड़ता है, टुकड़े-टुकड़े करेगा और कुचल डालेगा। और जहां तू ने पांवों और अंगुलियों को देखा कि वे कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं, वहां वह राज्य विभाजित होगा; परन्तु उसमें लोहे की कुछ शक्ति बनी रहेगी, क्योंकि तू ने लोहे को चिकनी मिट्टी के साथ मिला हुआ देखा। दानिय्येल 2:40, 41.

मिलर ने समझा कि केवल चार राज्य थे, और चौथा तथा अंतिम राज्य रोम था, जो इतिहास के अनुसार पहले मूर्तिपूजक रोम और उसके बाद पोप-शासित रोम था। मिलर के लिए चौथा राज्य, दानिय्येल के वचन के अनुरूप, "विभाजित" था, पर मिलर के लिए यह विभाजन केवल रोम के राज्य के शाब्दिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच का अंतर दर्शाता था। वह सही था, लेकिन उसकी समझ सीमित थी।

मिलर यह नहीं देख पाए कि मूर्तिपूजक रोम और पापसी रोम का विभाजन उसी विभाजन पर आधारित था जिसकी पहचान कराने के लिए पौलुस को उठाया गया था। पौलुस (और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला) ने यह पहचाना कि कूस के काल में शाब्दिक का आध्यात्मिक में रूपांतरण होना था। उस समझ के बिना मिलर को यह स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ा कि रोम मूलतः एक ही राज्य था जिसके दो चरण थे। और निस्संदेह, वह सही थे (परंतु सीमित अर्थ में)। वह यह नहीं देख पाए कि आध्यात्मिक रोम का प्रतिनिधित्व वास्तविक बाबुल द्वारा किया गया था, क्योंकि आध्यात्मिक रोम (पापसी) भी आध्यात्मिक बाबुल है।

शाब्दिक बाबुल, जैसा कि दानिय्येल अध्याय 2 में चार राज्यों में पहला है, चौथे राज्य का प्रतिरूप होता है, क्योंकि पहला सदैव अंतिम का प्रतिरूप होता है। मूर्तिपूजक रोम का प्रतिरूप बाबुल था, परन्तु मूर्तिपूजक रोम और बाबुल, दोनों ही आध्यात्मिक रोम (पापसी) के प्रतिरूप थे। अतः पापसी पाँचवाँ राज्य थी, और उसका प्रतिनिधित्व बाबुल द्वारा किया गया था। यही बुनियादी कारण है कि सिस्टर व्हाइट शाब्दिक इस्राएल की बाबुल में सत्तर वर्षों की बंदी अवस्था की तुलना, आध्यात्मिक इस्राएल की आध्यात्मिक बाबुल में बारह सौ साठ वर्षों की बंदी अवस्था से करती हैं।

"पृथ्वी पर परमेश्वर की कलीसिया इस दीर्घ, अनवरत उत्पीड़न के काल में उतनी ही वास्तव में बंधुआई में थी, जितनी कि निर्वासनकाल के दौरान बाबेल में इस्राएल की सन्तानें बंदी बनाकर रखी गई थीं।" भविष्यवक्ता और राजा, 714.

अतः मिलर को उन भविष्यवाणियों की पूर्तियों को, जो अधिक विशेष रूप से मूर्तिपूजक रोम की पहचान करती थीं, पापसी रोम के साथ अदल-बदल करने में कोई समस्या नहीं थी। हम आगे बढ़ते हुए इसके उदाहरण देंगे, लेकिन यदि हम समझ लें कि मिलर मूर्तिपूजक और पापसी रोम को एक ही राज्य मानते थे, तो हम समझ सकते हैं कि यीशु द्वारा "भविष्यवक्ता दानिय्येल द्वारा कही गई उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" का उल्लेख मूर्तिपूजक रोम की पूर्ति के रूप में करने से उन्हें क्यों कोई आपत्ति नहीं थी, जबकि दानिय्येल की पुस्तक में इसी "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" की अभिव्यक्ति को वे पापसी रोम के प्रतीक के रूप में समझते थे। मिलर तीन उजाड़ने वाली शक्तियों को नहीं देख पाए, और इसी कारण उनका भविष्यसूचक ढांचा सीमित था, यद्यपि वह सटीक था।

परंतु 66 ईस्वी में हुई ऐतिहासिक पूर्ति में जो विसंगति है, उसे हम कैसे समझें, जब मूर्तिपूजक रोम ने मसीह की भविष्यवाणी की पूर्ति में मंदिर के पवित्र प्रांगण में अपने ध्वजचिह्न स्थापित किए? क्या "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु, जिसके विषय में भविष्यवक्ता दानिय्येल ने कहा था," मूर्तिपूजक रोम का प्रतीक है या पापल रोम का? जब आप दो के स्थान पर तीन उजाड़ने वाली शक्तियों को पहचानते हैं, तो उस दुविधा का उत्तर काफी सरल हो जाता है। हमें यरूशलेम के विनाश के विषय में मसीह की भविष्यवाणी की पूर्ति पर सिस्टर वाइट की टिप्पणी से आरंभ करना चाहिए।

यहूदियों द्वारा मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने में ही यरूशलेम के विनाश का कारण निहित था। कलवरी पर बहाया गया रक्त वही भार था जिसने उन्हें इस संसार और आने वाले संसार दोनों में विनाश में डुबो दिया। इसी प्रकार महान अंतिम दिन में होगा, जब परमेश्वर के अनुग्रह को अस्वीकार करने वालों पर न्याय उतरेगा। मसीह, जो उनके लिए ठोकर का पत्थर हैं, तब उन्हें प्रतिशोध लेने वाले पर्वत के समान दिखाई देंगे। उनके मुखमंडल की महिमा, जो धर्मियों के लिए जीवन है, दुष्टों के लिए भस्म करने वाली आग होगी। अस्वीकृत प्रेम और तिरस्कृत अनुग्रह के कारण, पापी नष्ट कर दिया जाएगा।

"अनेकों दृष्टान्तों और बार-बार दी गई चेतावनियों के द्वारा, यीशु ने यह दिखाया कि परमेश्वर के पुत्र को अस्वीकार करने का यहूदियों के लिए क्या परिणाम होगा। इन वचनों में वे हर युग के उन सब लोगों से संबोधित थे जो उन्हें अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने से इनकार करते हैं। हर चेतावनी उन्हीं के लिए है। अपवित्र किया हुआ मंदिर, आज्ञा न मानने वाला पुत्र, धोखेबाज़ बटाईदार, तिरस्कार करने वाले निर्माता—इनके समकक्ष हर पापी के अनुभव में दिखाई देते हैं। यदि वह पश्चाताप न करे, तो जिस विपत्ति का उन्होंने संकेत किया था, वही उस पर आएगी।" *The Desire of Ages*, 600.

जब पौलुस ने शाब्दिक से आध्यात्मिक की ओर हुए संक्रमण की पहचान की, तो वे बताते हैं कि यह क्रूस के कालखण्ड में घटित हुआ; और ध्यान देने योग्य है कि यरूशलेम का विनाश सीधे क्रूस से जुड़ा हुआ है। शाब्दिक यरूशलेम का विनाश, जिसे पहले शाब्दिक बाबेल ने किया था, अंतिम बार शाब्दिक रोम ने किया, क्योंकि यीशु सदा आरंभ के साथ ही अंत को दर्शाते हैं। पवित्रस्थान और सेना का रौंदा जाना, जो बाबेल की मूर्तिपूजक शक्ति से आरंभ हुआ था, रोम की मूर्तिपूजक शक्ति पर आकर समाप्त हुआ।

आध्यात्मिक यरूशलेम का आध्यात्मिक पददलन पापाई रोम द्वारा किया गया था, और पददलन के वे दोनों काल (शाब्दिक और आध्यात्मिक) तीसरी उजाड़ने वाली शक्ति के द्वारा परमेश्वर की प्रजा के पददलन का प्रतिरूप हैं, जिसे रोम के संदर्भ में आधुनिक रोम कहा जाता है।

तीन उजाड़ करने वाली शक्तियाँ हैं, जो प्रत्येक परमेश्वर के लोगों को सताती हैं। मूर्तिपूजा का अजगर, उसके बाद कैथोलिकवाद का समुद्र से उठने वाला पशु, और उसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका का पृथ्वी से उठने वाला पशु (झूठा नबी)। मूर्तिपूजा का प्रतिनिधित्व विभिन्न मूर्तिपूजक शक्तियों ने किया, जिन्होंने शाब्दिक इस्राएल को रौंदा। फिर पापत्व ने 538 से 1798 तक बारह सौ साठ वर्षों तक आत्मिक इस्राएल को रौंदा। अजगर, पशु और झूठे नबी का त्रिगुट संघ आधुनिक रोम है और यह रविवार क्रानून के संकट की 'घड़ी' के दौरान भी परमेश्वर के लोगों को रौंदा है। अजगर, पशु और झूठे नबी की ये तीन उजाड़ करने वाली शक्तियाँ क्रमशः मूर्तिपरस्त रोम, पापल रोम और आधुनिक रोम के रूप में भी दर्शाई गई हैं।

प्रकाशितवाक्य सत्रह के संदर्भ में, पहले चार राजा मूर्तिपूजा हैं, पाँचवाँ राजा पोपसत्ता है, और छठा, सातवाँ तथा आठवाँ राजा आधुनिक रोम का त्रि-गठबंधन हैं।

और सात राजा हैं: पाँच गिर चुके हैं, एक है, और दूसरा अभी तक आया नहीं है; और जब वह आएगा, तो उसे थोड़े समय तक ठहरना पड़ेगा। और जो पशु था और अब नहीं है, वही आठवाँ है, और वह सातों में से ही है, और वह विनाश में जाता है। प्रकाशितवाक्य 17:10, 11.

दानियेल के दूसरे अध्याय के संदर्भ में, मूर्तिपूजा शाब्दिक बाबुल से शाब्दिक रोम तक के चारों राज्य हैं। आध्यात्मिक बाबुल पापाई सत्ता है (सोने का मस्तक), और अजगर, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता (आधुनिक रोम) का तीन-भागी संघ, आध्यात्मिक मादी-फ़ारस, आध्यात्मिक यूनान और आध्यात्मिक रोम (जिसकी घातक चोट चंगी हो गई है) के तीन-भागी संघ के द्वारा दर्शाया गया है।

जब यीशु ने 'नबी दानियेल द्वारा कही गई उजाड़ की घृणित वस्तु' का उल्लेख किया, तब वे एक विशिष्ट 'चिह्न' की ओर संकेत कर रहे थे जिसे रोम के तीनों रूपों में मसीहियों को पहचानना था। मूर्तिपूजक रोम, पोप-प्रधान रोम और

आधुनिक रोम सब परमेश्वर के लोगों को सताते हैं। उस सताव को भविष्यवाणी में पवित्रस्थान और सेना को रौंदे जाने के रूप में दिखाया गया है। यीशु ने उन तीनों सताव-कालों में उसके आने की पूर्व चेतावनी दी। जब रोम के अधिकार का 'चिह्न' पवित्रस्थान के भीतर रखा गया, तब यरूशलेम से भाग निकलने का समय आ गया था। यीशु 'उजाड़ की घृणित वस्तु' के विषय में दानिय्येल के कथन का उपयोग किसी सांसारिक सत्ता के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि उस चिह्न के प्रतीक के रूप में कर रहे थे जिसे मसीहियों को पहचानना था।

"यीशु ने सुन रहे चेलों को उन न्यायादेशों के विषय में बताया जो धर्मत्यागी इस्राएल पर आने वाले थे, और विशेषकर उस प्रतिदंडात्मक प्रतिशोध के विषय में जो मसीह को अस्वीकार करने और उन्हें क्रूस पर चढ़ाने के कारण उन पर आने वाला था। उस भयावह चरम से पहले स्पष्ट और अचूक संकेत प्रकट होंगे। वह भयावह घड़ी अचानक और शीघ्रता से आ जाएगी। और उद्धारकर्ता ने अपने अनुयायियों को चेतावनी दी: 'अतः जब तुम उस उजाड़ की घृणित वस्तु को, जिसका वर्णन भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने किया है, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो (जो पढ़े, वह समझ ले), तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की ओर भाग जाएँ।' मत्ती 24:15,16; लूका 21:20,21। जब रोमियों के मूर्तिपूजक ध्वजचिह्न उस पवित्र भूमि पर खड़े किए जाएँ, जो नगर की दीवारों के बाहर कुछ फर्लांग तक फैली हुई थी, तब मसीह के अनुयायियों को भागकर ही अपनी सुरक्षा ढूँढनी थी। जब यह चेतावनी का चिह्न दिखाई दे, तो जो लोग बच निकलना चाहें, उन्हें तनिक भी देर नहीं करनी चाहिए। समूचे यहूदिया देश में, और स्वयं यरूशलेम में भी, भागने के संकेत का तुरंत पालन किया जाना चाहिए था। जो घर की छत पर हो, वह अपने सबसे मूल्यवान धन-संपत्ति को बचाने के लिए भी अपने घर के भीतर न उतरे। जो खेतों या दाख की बारियों में काम कर रहे हों, वे उस बाहरी वस्त्र को लेने के लिए लौटने में समय न लगाएँ, जिसे उन्होंने दिन की गर्मी में परिश्रम करते समय उतारकर एक ओर रख दिया था। उन्हें एक क्षण भी न ठहरना चाहिए, कहीं वे सर्वनाश में न फँस जाएँ।" महान संघर्ष, 25।

उस अनुच्छेद में सिस्टर व्हाइट 'उजाड़ने वाली घृणित वस्तु' को एक 'अचूक चिह्न' के रूप में पहचानती हैं, जो 'रोमियों के मूर्तिपूजक ध्वज-चिह्नों' द्वारा प्रदर्शित था, जिन्हें उन्होंने पवित्रस्थान की 'पवित्र भूमि' में 'स्थापित' किया था। यीशु 'उजाड़ने वाली घृणित वस्तु' का उपयोग न तो मूर्तिपूजक रोम की और न ही पापाई रोम की किसी शक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए कर रहे थे, बल्कि एक 'चिह्न' के रूप में कर रहे थे। जब वह 'चिह्न' मंदिर की पवित्र भूमि में रखा गया, तो मसीहियों को यरूशलेम से भाग जाना था, 'कहीं वे व्यापक विनाश में न फँस जाएँ'। उसी अनुच्छेद में आगे सिस्टर व्हाइट यह भी बताती हैं कि विनाश की ओर संकेत करने वाली मसीह की भविष्यवाणी की एक से अधिक पूर्तियाँ थीं।

येरूशलेम पर दंडात्मक न्याय के आगमन के विषय में उद्धारकर्ता की भविष्यवाणी की एक और पूर्ति होने वाली है, जिसके सामने वह भयानक उजाड़ तो मात्र एक क्षीण छाया भर था। चुनी हुई नगरी के भाग्य में हम उस संसार का विनाश देख सकते हैं जिसने परमेश्वर की दया को ठुकरा दिया और उसकी व्यवस्था को रौंद डाला। पृथ्वी ने अपराध के अपने लंबे शताब्दियों में जो मानवीय दुर्दशा देखी है, उसके अभिलेख अंधकारमय हैं। विचार करते-करते हृदय म्लान हो उठता है, और मन शिथिल पड़ जाता है। स्वर्ग के अधिकार को अस्वीकार करने के परिणाम भयानक रहे हैं। परन्तु भविष्य के उद्घाटनों में इससे भी अधिक घोर दृश्य प्रस्तुत है। अतीत के अभिलेख—उथल-पुथल, संघर्षों और क्रांतियों की लंबी शृंखला, "योद्धा का युद्ध ... कोलाहल के साथ, और रक्त में लथपथ वस्त्र" (यशायाह 9:5)—ये सब उस दिन की विभीषिका की अपेक्षा क्या हैं, जब परमेश्वर का संयमकारी आत्मा दुष्टों से पूर्णतः हटा लिया जाएगा, और वह अब मानवीय आवेग तथा शैतानी क्रोध के उफान को रोकने के लिए लगाम नहीं लगाएगा! तब संसार शैतान के शासन के परिणामों को वैसा देखेगा जैसा पहले कभी नहीं देखा।

पर उस दिन, जैसे यरूशलेम के विनाश के समय, परमेश्वर के लोग छुड़ाए जाएँगे—हर एक जो जीवितों में लिखा पाया जाएगा। यशायाह 4:3. मसीह ने घोषित किया है कि वह अपने विश्वासयोग्यों को अपने पास इकट्ठा करने के लिए दूसरी बार आएगा: 'तब पृथ्वी की सब जातियाँ शोक करेंगी, और वे मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग के बादलों पर सामर्थ और बड़े तेज के साथ आते हुए देखेंगी। और वह अपने स्वर्गदूतों को बड़े तुरही-नाद के साथ भेजेगा, और

वे उसके चुने हुएों को चारों दिशाओं से, आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, इकट्ठा करेंगे।' मत्ती 24:30, 31. तब जो सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते, वे उसके मुख की श्वास से भस्म हो जाएँगे और उसके आगमन की चमक से नाश किए जाएँगे। 2 थिस्सलुनीकियों 2:8. प्राचीन इस्राएल के समान दुष्ट स्वयं अपना नाश करते हैं; वे अपनी अधर्मता से गिरते हैं। पापमय जीवन के द्वारा उन्होंने अपने आप को परमेश्वर के साथ सामंजस्य से इतना बाहर कर लिया है, उनकी प्रकृतियाँ बुराई से इतनी भ्रष्ट हो गई हैं, कि उसकी महिमा का प्रगटीकरण उनके लिए भस्म करने वाली आग ठहरता है।

"मनुष्यों को सावधान रहना चाहिए कि वे मसीह के वचनों में उन्हें दी गई शिक्षा की उपेक्षा न करें। जिस प्रकार उन्होंने अपने चेलों को यरूशलेम के विनाश के विषय में चेताया, उन्हें आसन्न नाश का एक चिन्ह दिया, ताकि वे बच निकलें; उसी प्रकार उन्होंने संसार को अंतिम विनाश के दिन के विषय में चेताया है और उसके निकट आने के संकेत भी दिए हैं, ताकि जो कोई चाहे आने वाले क्रोध से भाग सके। यीशु कहते हैं: 'सूर्य में, और चन्द्रमा में, और तारों में चिन्ह होंगे; और पृथ्वी पर जातियों में क्लेश होगा।' लूका 21:25; मत्ती 24:29; मरकुस 13:24-26; प्रकाशितवाक्य 6:12-17। जो लोग उसके आने के इन अग्रसूचकों को देखते हैं, उन्हें 'जान लेना चाहिए कि वह निकट है, द्वार पर ही है।' मत्ती 24:33। 'इसलिये जागते रहो,' यह उसकी चेतावनी के शब्द हैं। मरकुस 13:35। जो चेतावनी पर ध्यान देंगे, वे अन्धकार में नहीं छोड़े जाएँगे कि वह दिन उन्हें अनजाने में आकर न पकड़े। परन्तु जो नहीं जागते, उनके लिये 'प्रभु का दिन रात में चोर के समान आ जाएगा।' 1 थिस्सलुनीकियों 5:2-5।" द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, 36, 37.

जब बहन व्हाइट ने इन शब्दों को लिखा, तब यरूशलेम के विनाश की एक भविष्यकालीन पूर्ति अभी भी शेष थी। संसार के अंत में आधुनिक रोम (अजगर, पशु और झूठा नबी) के विरुद्ध जो प्रतिशोधात्मक न्याय किया जाएगा, वह आध्यात्मिक बाबुल के अंतिम पतन का प्रतिनिधित्व करता है; परन्तु आध्यात्मिक बाबुल (पापाई सत्ता) 1798 में एक बार पहले ही गिर चुका है। यरूशलेम का विनाश एक धर्मत्यागी कलीसिया पर परमेश्वर के प्रतिशोधात्मक न्याय को दर्शाता है।

66 ईस्वी से 70 ईस्वी तक के साढ़े तीन वर्षों में यरूशलेम का विनाश, संसार के अंत में आधुनिक रोम (अजगर, पशु और झूठा नबी) पर आने वाले परमेश्वर के प्रतिशोधात्मक न्याय द्वारा होने वाले विनाश का प्रतीक है। यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश, जो 66 ईस्वी से 70 ईस्वी तक मूर्तिपूजकों द्वारा किया गया, ठीक साढ़े तीन वर्ष तक चला।

पोपवाद द्वारा किए गए आध्यात्मिक यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश साढ़े तीन भविष्यसूचक वर्षों तक चला, 538 से 1798 तक। वे दोनों उदाहरण आधुनिक रोम द्वारा उत्पन्न रविवार के कानून के संकट की "घड़ी" में यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश का प्रतीक हैं। यरूशलेम के तीन विध्वंसों में से अंतिम उलट दिया जाता है, जैसा कि दानिय्येल की पुस्तक में दर्शाया गया है।

दानिय्येल की पुस्तक की शुरुआत बाबुल द्वारा यरूशलेम को जीतने और नष्ट करने से होती है, और उसका समापन बाबुल के विनाश और यरूशलेम की विजय पर होता है। तीनों युद्धों में, हर बार ईसाइयों को एक चिन्ह दिया गया, जिसने उन्हें आने वाले युद्ध से भाग निकलने के लिए आगाह किया। ईस्वी सन् 66 में, यह तब था जब मूर्तिपूजक रोम की सेनाओं ने अपने ध्वज (अपने युद्ध ध्वज) पवित्रस्थान की पवित्र भूमि में स्थापित किए। सन् 538 में, यह तब था जब "पाप का मनुष्य" प्रकट हुआ—वह परमेश्वर के मंदिर (मसीही कलीसिया) में बैठा, अपने आप को परमेश्वर दिखाते हुए—और उसी वर्ष ऑर्लियन्स की कौंसिल में उसने रविवार का कानून पारित किया। रविवार का प्रवर्तन वही बात है जिसे पापसी मसीही जगत पर अपने अधिकार के प्रमाण के रूप में पहचानती है, क्योंकि वे यह तर्क देते हैं (और यह तर्क सही है) कि परमेश्वर के वचन में रविवार की उपासना का कोई समर्थन नहीं है, और यह तथ्य कि ईसाई धर्म में उन्होंने आराधना के दिन के रूप में रविवार को स्थापित किया, इस बात का प्रमाण है कि उनकी मूर्तिपूजक परंपराएँ और रीति-रिवाज बाइबल से ऊपर अधिकार रखते हैं।

सन् 538 में, मसीहियों को रोमन कलीसिया से अलग हो जाना था; केवल इसलिए नहीं कि वह वास्तव में मसीही कलीसिया नहीं थी, बल्कि इसलिए भी कि परमेश्वर की कलीसिया के पवित्र क्षेत्र में पोप के अधिकार का चिह्न स्थापित कर दिया गया था। सिस्टर व्हाइट उस इतिहास में हुए अलगाव की प्रक्रिया की पहचान करती हैं, जिसने उस अवधि की शुरुआत की जब परमेश्वर की कलीसिया बारह सौ साठ वर्षों तक वन्य प्रदेश में भाग गई।

परंतु प्रकाश के राजकुमार और अंधकार के राजकुमार के बीच कोई एकता नहीं है, और उनके अनुयायियों के बीच भी कोई एकता नहीं हो सकती। जब मसीही उन लोगों के साथ एक होने के लिए सहमत हो गए जो पैगनवाद से केवल आधे-अधूरे ही परिवर्तित हुए थे, तो वे ऐसे मार्ग पर चल पड़े जो उन्हें सत्य से और अधिक दूर ले जाता गया। शैतान ने हर्ष मनाया कि वह मसीह के अनुयायियों की इतनी बड़ी संख्या को धोखा देने में सफल हो गया। फिर उसने इन्हीं पर अपनी शक्ति का पूरा बल लगाया और उन्हें उन लोगों को सताने के लिए उकसाया जो परमेश्वर के प्रति सच्चे बने रहे। सच्चे मसीही विश्वास का विरोध किस प्रकार करना है, यह उन लोगों से बेहतर किसी ने नहीं समझा जो कभी उसके रक्षक रहे थे; और ये धर्मत्यागी मसीही, अपने आधे-अधूरे परिवर्तित साथियों के साथ मिलकर, मसीह के सिद्धांतों के सबसे मूलभूत पहलुओं के विरुद्ध अपना युद्ध मोड़ दिया।

जो विश्वासयोग्य बने रहना चाहते थे, उन्हें उन छल-कपट और घृणित कुप्रथाओं के विरुद्ध दृढ़ बने रहने के लिए प्राणपण से संघर्ष करना पड़ा, जिन्हें पुरोहिती वेशभूषा में छिपाकर कलीसिया में प्रवेश कराया गया था। बाइबल को विश्वास का मानदंड नहीं माना जाता था। धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांत को विधर्म कहा गया, और उसके समर्थकों से घृणा की गई तथा उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया।

"दीर्घ और कठोर संघर्ष के बाद, कुछ विश्वासयोग्य लोगों ने यह निर्णय किया कि यदि धर्मत्यागी कलीसिया अब भी अपने को असत्य और मूर्तिपूजा से मुक्त करने से इंकार करती है, तो वे उससे हर प्रकार का संबंध तोड़ देंगे। उन्होंने देखा कि परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए अलग हो जाना बिल्कुल आवश्यक है। वे अपनी ही आत्माओं के लिए घातक त्रुटियों को सहन करने का साहस नहीं करते थे, और ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना नहीं चाहते थे जो उनके बच्चों और उनके बच्चों के बच्चों के विश्वास को संकट में डाल दे। शांति और एकता सुनिश्चित करने के लिए वे परमेश्वर के प्रति निष्ठा के अनुरूप कोई भी रियायत देने को तैयार थे; परंतु उनका मानना था कि सिद्धांत का त्याग करके प्राप्त की गई शांति भी अत्यधिक महंगी पड़ेगी। यदि एकता केवल सत्य और धार्मिकता के समझौते से ही प्राप्त हो सकती है, तो फिर भिन्नता ही सही, और चाहे युद्ध भी हो।" महान संघर्ष, 45.

हम इन विचारों को अगले लेख में आगे जारी रखेंगे।

अनंतता हमारे सामने पसरी हुई है। पर्दा उठने ही वाला है। हम जो इस गंभीर, जिम्मेदार स्थिति में हैं, हम क्या कर रहे हैं, किस बात पर विचार कर रहे हैं, कि हम अपनी स्वार्थी आराम-प्रियता से चिपके हुए हैं, जबकि हमारे चारों ओर आत्माएँ नाश हो रही हैं? क्या हमारे हृदय पूरी तरह संवेदनहीन हो गए हैं? क्या हम यह महसूस या समझ नहीं सकते कि दूसरों के उद्धार के लिए हमें एक कार्य करना है? भाइयो, क्या आप उन लोगों में से हैं जिनकी आँखें होते हुए भी देखते नहीं, और कान होते हुए भी सुनते नहीं? क्या व्यर्थ ही परमेश्वर ने आपको अपनी इच्छा का ज्ञान दिया है? क्या व्यर्थ ही उसने आपको चेतावनी पर चेतावनी भेजी है? क्या आप पृथ्वी पर जो आने वाला है उसके विषय में शाश्वत सत्य की घोषणाओं पर विश्वास करते हैं, क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर के न्याय लोगों पर मंडरा रहे हैं, और क्या तब भी आप निश्चित, आलसी, लापरवाह, सुख-भोगी बने बैठे रह सकते हैं?

यह अब वह समय नहीं है कि परमेश्वर की प्रजा अपना लगाव संसार से बाँधे या अपना खजाना संसार में संचित करे। वह समय दूर नहीं जब, प्रारम्भिक शिष्यों की भाँति, हमें उजाड़ और एकांत स्थानों में शरण ढूँढने के लिए विवश होना पड़ेगा। जिस प्रकार रोमी सेनाओं द्वारा यरूशलेम की घेरेबंदी यहूदिया के मसीहियों के लिए पलायन का संकेत थी, उसी प्रकार पोप के विश्रामदिन को लागू करने वाले फ़रमान के संबंध में हमारे राष्ट्र द्वारा शक्ति का प्रयोग हमारे लिए चेतावनी होगा। तब पहाड़ों के बीच एकांत स्थानों में बसे शांत आवासों के लिए छोटे नगरों को छोड़ देने की तैयारी के रूप में बड़े शहरों से निकल आने का समय होगा। और अब, यहाँ महंगे आवास खोजने के बजाय, हमें एक बेहतर देश—अर्थात् स्वर्गीय—की ओर जाने की तैयारी करनी चाहिए। आत्मतृष्टि में अपने

साधनों को व्यय करने के बजाय हमें मितव्ययिता सीखनी चाहिए। परमेश्वर से उधार मिली हर प्रतिभा का उपयोग उसकी महिमा के लिए, संसार को चेतावनी देने में, किया जाना चाहिए। शहरों में परमेश्वर के सहकर्मियों के लिए एक कार्य है। हमारे मिशनों को सहारा दिया जाना चाहिए; नए मिशन खोले जाने चाहिए। इस कार्य को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए कम नहीं, बल्कि पर्याप्त खर्च की आवश्यकता होगी। उपासना-गृहों की आवश्यकता है, जहाँ लोगों को इस समय के सत्य सुनने के लिए आमंत्रित किया जा सके। इसी उद्देश्य के लिए, परमेश्वर ने अपने भंडारियों को पूंजी सौंपी है। आपकी संपत्ति सांसारिक उद्यमों में ऐसी न फँस जाए कि यह कार्य रुक जाए। अपने साधनों को वहाँ रखें जहाँ आप उन्हें परमेश्वर के कार्य के हित में संचालित कर सकें। अपने खजानों को पहले ही स्वर्ग में भेज दीजिए। टेस्टिमोनीज़, खंड 5, पृष्ठ 464.